नटी – सुविहितप्रयोगतयार्यस्य न किमपि परिहास्यते।

सूत्रधार: - आर्ये, कथयामि ते भूतार्थम्।

आपरितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्।

बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेत:॥

संधि-विच्छेद: –

नटी – सुविहितप्रयोगतया आर्यस्य न किम् अपि परिहास्यते।

सूत्रधार: - आर्ये, कथयामि ते भूतार्थम्।

विदुषाम् परितोषात् आ प्रयोगविज्ञानम् साधु न मन्ये। बलवत् अपि शिक्षितानाम् चेत: आत्मनि अप्रत्ययम् (भवति)।

अर्थ –

नटी – आर्य के नाट्यविषयक सुंदर प्रयोग के कारण किसी भी प्रकार से हास्यास्पद नहीं होगा (आर्य के अभिनय का विधान सुचारू होने के कारण कोई कमी नहीं रहेगी)।

सूत्रधार: - आर्ये, आपसे वास्तविक बात कहता हूँ।

विद्वानों को जब तक संतोष न हो जाय, तब तक मैं अभिनय के ज्ञान को ठीक नहीं मानता। अत्यधिक सीखे हुए का भी चित्त आत्मविश्वास से रहित होता है।

व्याख्या-

सुविहितप्रयोगतया = सुष्ठु विहित: सुविहित: तस्य भाव: सुविहिता अर्थात सम्यक् रोंप से करने का भाव।

आर्यस्य = आर्य का षष्ठी एकवचन

न = नहीं

किम् = क्या

अपि = भी

परिहास्यते = परिहास किया जाएगा। परि+√हा+यत् लृट्लकार, प्रथम पुरुष एकवचन

कथयामि = कहता हूँ √कथ् लट्लकार उत्तम पुरुष एकवचन

ते = तुमको, युष्मद् चतुर्थी एवं षष्ठी एकवचन

भूतार्थम् = यथार्थ, भूत: छ स अर्थ: भूतार्थ:

विदुषाम् = विद्वानों का विदुष् षष्ठी बहुवचन

आपरितोषात् = संतुष्टिपर्यंत परितोष पंचमी एकवचन

प्रयोगविज्ञानम् = अभिनय का विज्ञान द्वितीया एकवचन

साधु = समीचीन

न = नहीं

मन्ये = मानता हूँ √मान लट्लकार उत्तम पुरुष एकवचन

बलवत् = बलवान

अपि = भी

शिक्षितानाम् = शिक्षितों का षष्ठी बहुवचन

चेत: = चित्त

आत्मनि = अपने विषय में सप्तमी एकवचन

अप्रत्ययम् = अविश्वास

श्लोक की व्याख्या:

इस पद्य में सूत्रधार ने अत्यंत विनम्रता से अपनी बात रखी है कि किसी रचना की उत्कृष्टता विद्वानों की पारखी दृष्टि से ही तय होती है और उनकी संतुष्टि से कोई कृति स्वत: प्रमाणित हो जाती है। सूत्रधार आगे कहता है कि जब तक विद्वज्जन के द्वारा प्रमाणित नहीं हो जाता तब तक मैं अभिनय के ज्ञान को ठीक नहीं मानता। पारंगत व्यक्ति का भी चित्त आत्मविश्वास से रहित होता है। वह संशयग्रस्त रहता है कि अन्यों की दृष्टि में उसका कृत्य किस कोटि का होगा।